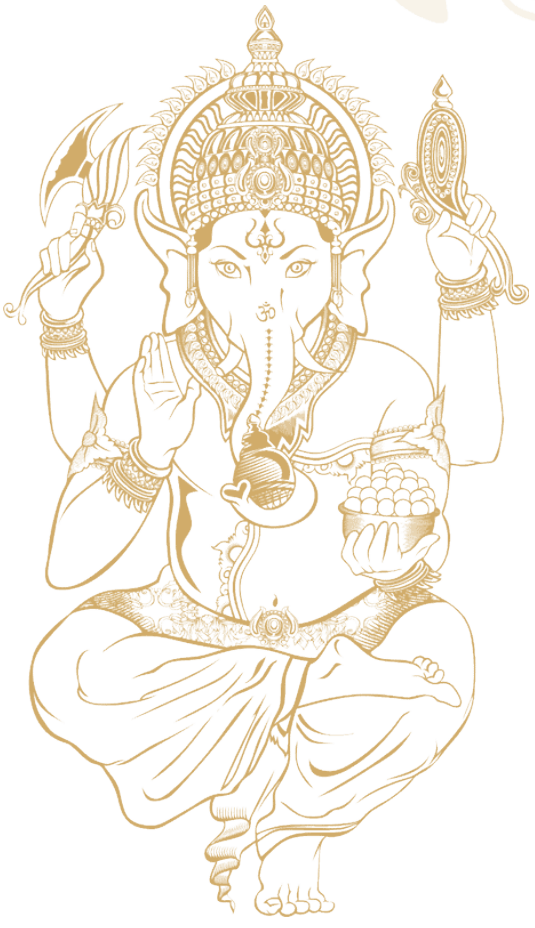

Dushyant

Ayushi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120907806

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
28/02/1998	जन्म तिथि	20/02/1999
शनिवार	दिन	शनिवार
घंटे 08:19:00	जन्म समय	22:00:00 घंटे
घटी 03:36:51	जन्म समय(घटी)	37:30:39 घटी
India	देश	India
Jaipur	स्थान	Ajmer
26:53:00 उत्तर	अक्षांश	26:29:00 उत्तर
75:50:00 पूर्व	रेखांश	74:40:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:40	स्थानिक संस्कार	-00:31:20 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:52:15	सूर्योदय	07:04:01
18:26:38	सूर्यास्त	18:26:34
23:49:48	चित्रपक्षीय अयनांश	23:50:32

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शनि 16वर्ष 7मा 20दि		14:16:20	मीन	लग्न	कन्या	26:06:21	केतु 4वर्ष 0मा 27दि	
बुध		15:28:45	कुंभ	सूर्य	कुंभ	07:44:34	सूर्य	
20/10/2014		04:59:22	मीन	चंद्र	मेष	05:34:24	19/03/2023	
20/10/2031		02:37:36	मीन	मंगल	तुला	14:44:19	19/03/2029	
बुध	17/03/2017	20:29:58	कुंभ	बुध	कुंभ	20:48:05	सूर्य	07/07/2023
केतु	15/03/2018	11:50:47	कुंभ	गुरु	मीन	07:51:21	चन्द्र	06/01/2024
शुक्र	12/01/2021	02:57:09	मक	शुक्र	मीन	04:42:08	मंगल	12/05/2024
सूर्य	19/11/2021	24:10:01	मीन	शनि	मेष	05:23:08	राहु	06/04/2025
चन्द्र	20/04/2023	16:42:04	सिंह	राहु व	कर्क	28:15:53	गुरु	23/01/2026
मंगल	17/04/2024	16:42:04	कुंभ	केतु व	मक	28:15:53	शनि	05/01/2027
राहु	04/11/2026	16:35:23	मक	हर्ष	मक	19:59:30	बुध	12/11/2027
गुरु	09/02/2029	07:13:28	मक	नेप	मक	09:05:28	केतु	19/03/2028
शनि	20/10/2031	14:11:52	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	16:31:31	शुक्र	19/03/2029

लग्न-चलित

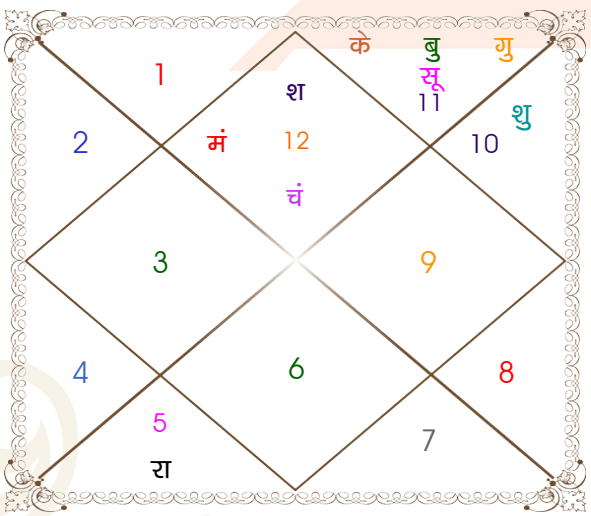

लग्न-चलित

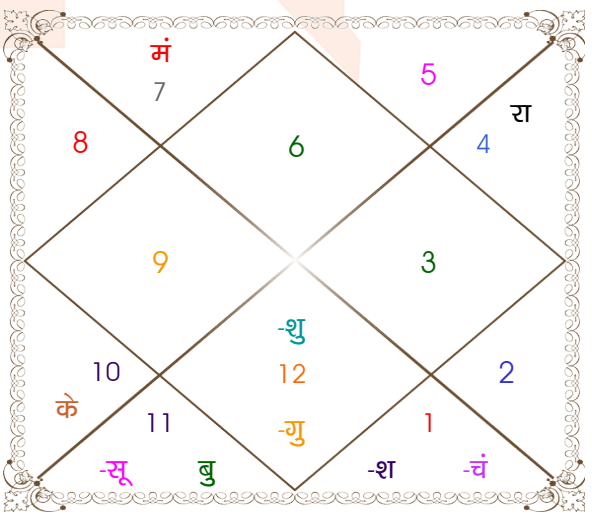

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	गौ	अश्व	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	देव	6	5.00	--	सामाजिकता
भकूट	मीन	मेष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.50		

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

क्नीलंदज का वर्ग सर्प है तथा ।लनींप का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क्नीलंदज और ।लनींप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

क्नीलंदज मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं चन्द्र क्नीलंदज कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

।लनींप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ।लनींप कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष

कट जाता है।

क्नैीलंदज तथा ।लनैीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।